व्रत माहात्म्य एवं विधि

संतोषी माता के पिता गणपति और माता ऋद्धि-सिद्धि हैं। इनका परिवार धन-धान्य, सोना-चांदी, मोती-मूंगा तथा रत्नों से भरा है। पिता गणेश की कृपा से दरिद्रता और कलह का नाश, घर में सुख तथा शांति, बाल-गोपाल से भरा परिवार, व्यापार में लाभ-ही-लाभ, मन की सर्वकामनाओं की पूर्ति और शोक, विपत्ति, चिंता आदि सब दूर होती हैं।

कथा प्रारंभ करने से पहले पवित्र स्थान पर एक तांबे का कलश जल से भरकर रखें। उस कलश के ऊपर एक कटोरी में गुड़ और चना रखें। ध्यान रहे, प्रसाद सदैव सवाया ही चढ़ाया जाता है जैसे सवा रुपये का, ढाई रुपये का आदि, अपनी क्षमता के अनुसार ही प्रसाद लें। माता प्रेम व श्रद्धा की भूखी हैं, मात्रा की नहीं।

कथा कहने वाला अपने सीधे हाथ में गुड़ व

चना रखे। कथा श्रवण करने वाले समय-समय पर 'संतोषी माता की जय' बोलते रहें। कथा समाप्त होने पर आरती करें तथा कलश में रखा जल पहले पूरे घर में छिड़कें फिर शेष जल तुलसी को चढ़ा दें। कथा कहने वाला अपने हाथ में रखा गुड़ और चना गऊ माता को खिलाए। इसके पश्चात् कटोरी में रखा प्रसाद कथा सुनने वालों तथा घर के सदस्यों में बांट दें। एक समय भोजन करें। जितने शुक्रवार व्रत करने का संकल्प किया हो, वह समय पूरा होने पर उद्यापन करना आवश्यक है। उद्यापन में घर के तथा पड़ोस के बच्चों को बुलाकर भोजन करवाकर यथाशक्ति दक्षिणा दें। इस दिन घर में कोई खटाई का सामान न बनाएं।

विधि के अनुसार व्रत करने से व्रतकर्ता की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। परिवार में सुख-शांति और व्यापार में उन्नति के लिए यह व्रत सर्वोत्तम तथा अत्यधिक सरल है।